सा विद्या या विमुक्तये

विद्या भारती बी.एड. कॉलेज

तोदी नगर, सीकर (राज.), फोन : 01572-274116

Website : vibhacollege.org.in | E-mail : vibhacollegebed@gmail.com

विवरणिका

सत्र 2015-17

निदेशक–संदेश

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।।

किसी भी देश अथवा राज्य का उत्थान वहां की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने की धुरी है– शिक्षक। शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो देश, काल एवं परिस्थितियों के आधार पर प्रभावित होती है। इस गतिशील प्रक्रिया का सम्बन्ध व्यक्ति, समाज व राष्ट्र से है और इनका निर्माता शिक्षका को माना जाता हैं। राष्ट्र की चहुँमुखी विकास में एक शिक्षक की अहम् भूमिका है। संस्थान के द्वारा संचालित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक तौर पर गुणवतापूर्ण प्रशिक्षित शिक्षक तैयार करना है।

मैं व्यक्तिगत रूप से पूर्णतः आशान्वित हूँ कि संस्थान द्वारा संचालित यह शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम भावी शिक्षकों के व्यावहारिक आयामों को प्रभावी बनाने के साथ–साथ भावी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास में अतुलनीय सहयोग करेगा।

(डॉ. बलवन्त सिंह चिराना)
निदेशक

प्राचार्य की कलम से

ईश्वरीय असीम अनुकम्पा से भू–लोक पर अनेक प्राणियों का आविर्भाव हुआ है। उन समस्त प्राणियों का मानव का सर्वोत्कृष्ट स्थान है। मनुष्य अपनी बुद्धि के बल पर ही आज सम्पूर्ण जगत में नये–नये आविष्कारों एवं प्रयोगों के द्वारा अपना परचम लहरा रहा है। अगर पृथ्वी पर मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, तो इनके पीछे कारण है उसका शिक्षा–तंत्र। शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो सकता है। शिक्षित व्यक्ति ही अपने ज्ञान के बल पर व्यक्तिगत, अपने परिवार एवं राष्ट्र का कल्याण कर सकता है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक आदर्शों का विकास कर उसे सभ्य समाज का नर्माण करने के योग्य बनाया जाता है, अतः शिक्षा के क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए अनेक संसाधनों की आवश्यकता होती है। जैसे विद्यालय भवन, योग्य शिक्षक एवं पाठ्यक्रम। योग्य शिक्षकों के अभाव में हम समुचित उद्देश्यों को अच्छे ढंग से अर्जन नहीं कर सकते। अतः सुयोग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षिकों की न्यूनता को पूर्ण करने के उद्देश्य से सीकर जनपद में 'विद्या भारती बी. एड. कॉलेज' की स्थापना की गई है।

महाविद्यालय द्वारा 200 सीटों पर शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का कुशल संचालन किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से समाज के लिए सुयोग्य शिक्षकों का निर्माण निरन्तर किया जा रहा है। महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थियों के समुचित विकास हेतु सैद्धान्तिक, व्यावहारिक एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियों का आयोजन किया जाता हैं। सुयोग्य प्राध्यापकों द्वारा समुचित संसाधनों के सहयोग से प्रशिक्षणार्थियों की बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं राजनैतिक इत्यादि क्षमताओं का विकास किया जाता है।

महाविद्यालय के प्रशिक्षित शिक्षकों के इस सृजन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र विस्तार एवं सभ्य–समाज के निर्माण में सराहनीय प्रयास किया जा रहा हैं।

नये सत्रारम्भ के अवसर पर नवागन्तुक सभी प्रशिक्षणार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. मीना जोशी
प्राचार्य

अनुक्रमणिका

1.	सामान्य एवं महाविद्यालय परिचय	4
2.	महाविद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया	4
3.	विश्वविद्यालय नामांकन एवं योग्यता	5
4.	प्रशिक्षणार्थियों हेतु अति आवश्यक नियम	5
5.	पाठ्यक्रम	6
6.	शैक्षिक कार्यक्रम पंचांग	7
7.	संस्थान द्वारा संचालित प्रशिक्षणार्थियों के प्रभावी प्रकल्प एवं प्रायोजनाऐं	7
8.	पुस्तकालय नियम	7
9.	चरित्र निर्माण हेतु संस्कारशील प्रात:कालीन सभा का कार्यक्रम	8
10.	राष्ट्र गीत	12
11.	राष्ट्र गान	12

सामान्य एवं महाविद्यालय परिचय :

सम्पूर्ण भारत वर्ष की अध्यापक शिक्षा को संचालित एवं नियमित करने वाली संवैधानिक संस्था राष्ट्रयी अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) की उत्तर क्षेत्रीय समिति जयपुर द्वारा श्रेष्ठता, गुणवत्ता एवं सुदृढ़ भौतिक, मानवीय संसाधनों की परख पर खरा उतरने पर दिनांक 13 अगस्त, 2006 से विद्या भारती बी.एड. कॉलेज को शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालन करने हेतु 100 सीटों की मान्यता प्रदान की गई। महाविद्यालय के शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की गुणवत्ता एवं सुचारू संचालन को देखते हुए अगले वर्ष सन् 2008 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) ने महाविद्यालय को 100 सीटों की और मान्यता प्रदान की। वर्तमान में महाविद्यालय 200 सीटों पर शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का सफल संचालन करते हुए राष्ट्र के लिए निरन्तर सुयोग्य नागरिकों का निर्माण कर रहा है।

महाविद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया :

राजस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुचारु, सफल संचालन एवं क्रियान्वयन के लिए सन् 1998 से PTET के द्वारा राजस्थान के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्री टेस्ट द्वारा राज्य स्तर पर प्रवेश की प्रक्रिया पूर्ण की जाती है। राजस्थान में प्रभावी शिक्षकों के निर्माण के लिए शिक्षक प्रशिक्षण को गुणात्मक, उच्च स्तरीय एवं प्रभावशाली बनाने के लिए तथा प्रवेश में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने और राष्ट्र की शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन को दृष्टिगत रखते हुए राजस्थान सरकार द्वारा अनुमोदित, विश्वविद्यालय द्वारा नियोजित एवं आयोजित PTET की वरीयता सूची में स्थान रखने वाले एवं इस विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित छात्र-छात्राओं को महाविद्यालय में प्रवेश दिया जाता हैं।

महाविद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रवेश के लिए निर्धारित आवेदन पत्र की पूर्ति कर अग्रलिखित प्रमाण-पत्रों की राजपत्रित अधिकारी द्वारा सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करना आवश्यक है। प्रवेश के लिए उपस्थित होने पर सत्यापन के लिए मूल प्रमाण-पत्रों को साथ में लाना अति आवश्यक हैं।

1. समन्वयक, पी.टी.ई.सी. द्वारा निर्गमित मूल अंक तालिका एवं काउन्सलिंग सूचना पत्र।
2. सैकण्डरी परीक्षा की अंकतालिका व प्रमाण-पत्र। (जन्मतिथि प्रमाण-पत्र)
3. सीनियर सैकण्डरी परीक्षा की अंकतालिका व प्रमाण-पत्र।
4. स्नातक (प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ष) की अंकतालिका व प्रमाण-पत्र।
5. स्नातकोत्तर परीक्षा की अंक-तालिका। (यदि प्रवेश फार्म के साथ संलग्न की हो तो)
6. जाति प्रमाण-पत्र (एस.सी.एस.टी.) अन्य पिछड़ा वर्ग, विशेष पिछड़ा वर्ग
   (अ) अन्य पिछड़ा वर्ग व विशेष पिछड़ा वर्ग का जाति प्रमाण-पत्र छः माह से पुराना नहीं होना चाहिए।

7. मूल निवास प्रमाण-पत्र
8. सह-शैक्षणिक गतिविधियों का प्रमाण-पत्र
9. चरित्र प्रमाण-पत्र (मूल)
10. विकलांग श्रेणी प्रमाण-पत्र (यदि लागू हो)
11. छात्रवृत्ति हेतु आय प्रमाण-पत्र (यदि लागू हो)
12. प्रव्रजन प्रमाण-पत्र
13. रक्षाकर्मी अथवा उसके आश्रित का प्रमाण-पत्र
14. विधवा/परित्यक्ता का प्रमाण-पत्र (न्यायालय द्वारा जारी परित्यक्ता व पुनः शादी न करने का शपथ-पत्र)
15. पासपोर्ट आकार के चार नवीनतम रंगीन फोटो।

''विश्वविद्यालय नामांकन एवं योग्यता''

शिक्षण संस्थान में प्रवेश के पश्चात् ऐसे विद्यार्थी को जिसने अनिवार्य योग्यता परीक्षा (स्नातक/अधिस्नातक) पं. दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय के अतिरिक्त किसी अन्य विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की है उसे पं. दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय में नामांकन करवाने हेतु निर्धारित तिथि तक, निर्धारित शुल्क देकर फॉर्म के साथ निम्नलिखित प्रपत्र को संलग्न करना होगा :-

1. मूल माईग्रेशन प्रमाण-पत्र
2. सैकण्डरी प्रमाण-पत्र (मूल एवं सत्यापति छायाप्रति)
3. स्नातक/अधिस्नातक अंकतालिका (मूल एवं सत्यापति)
4. समन्यक पूर्व परीक्षा द्वारा निर्गमित अस्थायी प्रवेश पत्र एवं फीस जमा रसीद की मूल प्रति।
5. एस.सी.एस.टी. के प्रशिक्षणार्थियों के लिए जाति प्रमाण-पत्र की छायाप्रति अनिवार्य हैं।

प्रशिक्षणार्थियों हेतु अत्यावश्यक नियम

1. विश्वविद्यालय के निर्धारित नियमों के अनुसार प्रशिक्षणार्थी की अपने प्रवेश तिथि से सत्र पर्यन्त न्यूनतम उपस्थिति 80 प्रतिशत अनिवार्य हैं अन्यथा उसे परीक्षा में बैठने की अनुमति किसी भी शर्त पर नहीं दी जायेगी।
2. प्रशिक्षणार्थी को संस्थान द्वारा निर्धारित गणवेश में ही आना अनिवार्य है। ऐसा न करने पर कक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।
3. प्राचार्य से अवकाश स्वीकृत करवाना अनिवार्य होगा। अन्यथा अनुपस्थित रहने पर उपस्थिति पंजिका से प्रशिक्षणार्थी का नाम पृथक करने की कार्यवाही की जायेगी।
4. प्रशिक्षणार्थी को अपना परिचय-पत्र संस्थान में सदैव अपने साथ रखना होगा अन्यथा उस दिन प्रवेश से वंचित रखा जायेगा।
5. संस्थान में मोबाईल का उपयोग सर्वथा वर्जित है। कक्षा-शिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थी के द्वारा मोबाईल का उपयोग किए जाने पर मोबाईल जब्त कर प्रशिक्षणार्थी के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी।
6. प्रशिक्षणार्थी के अवांछनीय आचरण के कारण एवं शैक्षणिक/अशैक्षणिक कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार के दोषी पाये जाने पर दण्डात्मक कार्यवाही कर विश्वविद्यालय को प्रशिक्षणार्थी की अनुचित गतिविधि के लिए शिकायत की जा सकती है।
7. संस्थान द्वारा आयोजित होने वाली विभिन्न शैक्षिक व सह-शैक्षिक गतिविधियों में प्रशिक्षणार्थी का भाग लेना अनिवार्य होगा। इसके लिए संबंधित प्रभारी से सम्पक्र कर उपस्थिति देनी होगी।

8. महाविद्यालय में निर्धारित समय पर पहुँचना अति आवश्यक है।
9. केवल विशेष परिस्थिति में ही अवकाश स्वीकृत किया जायेगा।
10. प्रार्थना सभा में प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है।
11. संस्थान परिसर में किसी भी प्रकार का धूम्रपान सर्वथा वर्जित है, ऐसा करते हुए पाये जाने पर उस प्रशिक्षणार्थी के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी।
12. प्रशिक्षणार्थी नियमानुसार पूरे सत्र पठनाभ्यास एवं प्रायोगिक अभ्यास में शामिल होकर अपना सम्पूर्ण कार्य स्वयं अपने स्तर पर करेंगे। ऐसा नहीं करने पर प्रशिक्षणार्थी को परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जायेगी।
13. संस्थान परिसर में स्वच्छता एवं अनुशासन का विशेष ध्यान रखा जाए।

पाठ्यक्रम

विद्या भारती बी. एड. कॉलेज पं. दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय से संबंद्ध हैं। अतः बी.एड. परीक्षा के लिए पं. दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम ही मान्य है जिसमें निम्न विषय हैं-

1. अनिवार्य विषय

(कुल 12 विषय है।)

2. शिक्षण विषय (कोई दो)

एक विषय बी.एड. पार्ट-I हेतु व
द्वितीय विषय बी.एड. पार्ट-II हेतु

कला

अ. हिन्दी शिक्षण
ब. संस्कृत शिक्षण
स. नागरिक शास्त्र शिक्षण
द. सामाजिक अध्ययन शिक्षण
य. अर्थशास्त्र शिक्षण
र. इतिहास शिक्षण
व. गृह-विज्ञान शिक्षण

विज्ञान

अ. रसायन विज्ञान शिक्षण
ब. सामान्य विज्ञान शिक्षण
स. जीव विज्ञान शिक्षण

वाणिज्य

अ. वाणिज्य शास्त्र शिक्षण
ब. बही-खाता शिक्षण

3. कम्प्यूटर

अ. सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (ICT)

4. विशेष विषय

अ. शांति शिक्षा
ब. स्वास्थ्य शिक्षा एवं योग
स. निर्देशन एवं परामर्श
द. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा
य. पर्यावरणीय शिक्षा

शैक्षिक कार्यक्रम पंचांग

शैक्षिक कार्यक्रम पंचांग शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा जारी पंचांग ही महाविद्यालय में लागू होगा। जिसके अन्तर्गत उक्त सत्र में निम्न गतिविधियां संचालित की जायेगी :-

1. स्वागत एवं परिचय समारोह
2. कक्षा अध्यापन
3. सूक्ष्म शिक्षण
4. प्रदर्शन पाठ
5. शिक्षण अभ्यास प्रथम चक्र
6. कक्षा अध्यापन
7. वनशाला शिविर (एस.यू.पी.डब्ल्यू)
8. अन्तर्परिषदीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता
9. कक्षा अध्यापन
10. सत्रीय-कार्य
11. समालोचना पाठ
12. खण्ड शिक्षण अभ्यास
13. शैक्षिक भ्रमण
14. मध्यावधि मूल्यांकन
15. वार्षिक पाठ योजना
16. विदाई समारोह
17. शनिवारीय कार्यक्रम

(सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक कार्यक्रम, नैतिक एवं बौद्धिक वार्ताऐं)

''संस्थान द्वारा संचालित प्रशिक्षणार्थियों के प्रभावी प्रकल्प व प्रायोजनाऐं''

सबल समाज एवं राष्ट्र समर्पित शिक्षण निर्माण हेत संस्था प्रशिक्षणार्थियों में लोकतन्त्रीय व शिक्षकोचित मानक मूल्यों का अंकुरण और प्रस्फुटन करने हेतु कक्ष-समूह को 4 परिषदों में विभाजित किया गया है। यथा- गार्गी परिषद, टैगोर परिषद, अरविन्द परिष्इद और तिलक परिषद। इनमें 50-50 प्रशिक्षणार्थियों का समूह बनाकर व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करने का प्रयास किया जायेगा। सभी परिषदों के सचिव, उपसचिव, सांस्कृतिक सचिव एवं क्रीड़ा सचिव सहित कुल 26 प्रशिक्षणार्थी पदाधिकारियों की संयुक्त सहभागिता तथा सहयोग प्राचार्य एवं व्याख्याताओं द्वारा किया जायेगा।

1. प्रार्थना सभा हॉल
2. सेमीनार हॉल
3. भव्य पुस्तकालय एवं वाचनालय
4. छात्राध्यापिकाओं के लिए सामान्य कक्ष
5. छात्राध्यापकों के लिए सामान्य कक्ष
6. मनोविज्ञान प्रयोगशाला
7. आकर्षक शैक्षिक तकनीकी कक्ष
8. कम्प्यूटर प्रयोगशाला एवं इन्टरनेट सुविधा
9. मनमोहक उद्यान
10. उपयुक्त क्रीड़ा स्थल।

पुस्तकालय नियम

1. पुस्तकालय में शांति बनाए रखें एवं अपनी सीट छोड़ने के समय कुर्सी को सुव्यवस्थित रखें।
2. पुस्तकालय से कोई पुस्तक तथा पत्र-पत्रिका पुस्तकालयाध्यक्ष की अनुमति के बिना बाहर न ले जाए।

3. पुस्तकालय कार्ड पुस्तकालय की धरोहर है, इसे सत्र के अन्त में जमा किया जाएगा। इसके खोन पर तुरन्त पुस्तकालयाध्यक्ष को सूचित करें अन्यथा इसका दुरूपयोग होने पर आप स्वयं जिम्मेदार होंगे।
4. पुस्तक प्राप्त करते समय अच्छी तरह जांच ले। कटी-फटी, मार्किंग या अण्डरलाईन की हुई पुस्तक जमा नहीं होगा।
5. निर्धारित अवधि में ही पुस्तक वापस लौटा देंवे अन्यथा निर्धारित अवधि के पश्चात पुस्तक रखने पर दो रू. प्रतिदिन प्रति पुस्तक विलम्ब शुल्क लिया जाएगा।
6. पुस्तकालय में प्रवेश के समय अपने बैग, नोट बुक या अन्य सामान नियत स्थान पर रखकर ही पुस्तकालय में प्रवेश करें।
7. मैग्जिन डिस्प्ले के ऊपर से पत्रिका लेते समय इस स्थान पर अपना पहचान पत्र रखें एवं बिना पुस्तकालयाध्यक्ष की अनुमति के अन्दर से पत्रिकाएं न निकाले।
8. पुस्तकालय की पुस्तक के खाने या फटने पर उस पुस्तक का पूरा मूल्य लिया जायेगा।
9. अलमारी में से पुस्तक निकालने के बाद उसे काउन्टर पर रखें एवं पुस्तकालयाध्यक्ष को सूचित करें।

चरित्र निर्माण हेतु संस्कारशील प्रातःकालीन प्रार्थना सभा कार्यक्रम

1. सरस्वती पूजन
2. गुरू वन्दना
3. प्रार्थना
4. गायत्री मंत्र
5. प्रतिज्ञा
6. अनमोल वचन
7. प्रेरक प्रसंग
8. समाचार वाचन
9. सामान्य ज्ञान
10. राष्ट्र गान/राष्ट्रीय गीत

गुरू वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।।

''श्लोक''

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला,
या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा,
या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभि-
र्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती,
निःशेष जाड्यापहा।।
शुक्लां ब्रह्माविचारसारपरमा
माद्यां जगद्व्यापिनीम्।
वीणा-पुस्तक धारिणीमभयदां,
जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकांविदधतीं,
पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं,
बुद्धि प्रदां शारदाम्।

1. प्रार्थना

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना,
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।
दूर अज्ञान के हो अंधेर,
हर बुराई से बच के रहें हम,
जितनी भी दे भली जिंदगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।
हम ना सोचें हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण,
फूल खुशियों के बांटे सभी को,
सब का जीवन ही बन जाए मधुबन।
अपनी करूणा का जल तू बहा के,
कर दें पावन हर इक मन क्का कोना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना,
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।

2. प्रार्थना

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम,
ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चलें और बदी से टलें,
ताकि हंसते हुए निकले दम
ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा
हो रहा बेखबर, कुछ ना आता नजर
सुख का सूरज छिपा जा रहा
है तेरी रोशनी में वो दम,
जो अमावस को कर दे पूनम। नेकी पर...

जब जुल्मों का हो सामना, तब त ही हमें थामना
वो बुराई करे, हम भलाई भरें
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये
भरम। नेकी पर...

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है इसमें कमी
पर तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा
तेरी कृपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम
तू ही झेलेगा हम सबके गम
नेकी पर चले और वदी से टले, ताकि हंसते हुए
निकले दम।

3. प्रार्थना

हे स्वर की देवी माँ, वाणी में मधुरता दो
हम गीत सुनाते है, संगीत हमें दे दो।
सरगम का ज्ञान नहीं, ना लय का ठिकाना है
तुझे आज सभा में माँ, मुझे दर्श दिखाना है
गीतों के खजाने से, एक गीत हमें दे दो।

हम गीत सुनाते है, संगीत हमें दे दो।
हे स्वर की देवी माँ, वाणी में मधुरता दो
अज्ञान ग्रसित होकर, क्या गीत सुनाऊ मैं
दो ज्ञान स्रोत मैया, यह मुझे पे महर कर दो
हम गीत सुनाते है, संगीत हमें दे दो।
हे स्वर की देवी माँ, वाणी में मधुरता दो

भक्ति ना शक्ति है, सेवा का ज्ञान नहीं
तुम्हे आज सुनाने को, मेरी मैया कुछ भी नहीं
संगीत समंदर से, सुरताल हमें दे दो।
हम गीत सुनाते है, संगीत हमें दे दो।
हे स्वर की देवी माँ, वाणी में मधुरता दो

4. प्रार्थना

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतम् गमय।।
दया कर दान विद्या का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।
हमारे ध्यान में आओ, प्रभो! आँखों में बस जाओ।
अन्धेरे दिल में आ करके, परम ज्योति जगा देना।।
दया...
वहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिल-जुलकर, प्रभो रहना सिख देना।
दया...
हमारा धर्म हो सेवा, हमारा कर्म हो सेवा।
सदा ईमान को सेवा, व सेवक जन बना देना।।
दया...
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभो हमको सिखा देना।।
दया...
ओम सहनावयतु। सह नौ भुनक्तु। सहवीर्य
करवावहे।
तेजस्थिनावधीतमस्तु मा विद्विवाव है।
ओम् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः !!!

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है
समस्त भारतीय मेरे भाई-बहिन हैं।
मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ
तथा मुझे इसकी विपुल एवं
विविध थातियों पर गर्व है।
मैं इसके योग्य होने के लिए
सदैव प्रयत्न करता/रहूंगा/रहूंगी।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापक एव
समस्त बड़ों का सम्मान करूंगा/करूंगी
तथा प्रत्येक व्यक्ति के साथ,
शिष्टता से व्यवहार करूंगा/करूंगी।
मैं अपने देश एवं देशवासियों के प्रति
निष्ठा बनाये रखने की प्रतिज्ञा करती हूँ।
मेरी प्रसन्नता केवल उनके कल्याण एवं
सुख समृद्धि में ही निहित हैं।
जय हिन्द

''गायत्री मंत्र''

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

''प्रयाण गीत''

निज राष्ट्र के शरीर के शृंगार के लिए,
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो - 2
तन की स्वतंत्रता चरित्र का निखार हैं - 2
मन की स्वतंत्रता विचार की बहार है,
घर की स्वतंत्रता अमर पुकार है,
टूटे कभी ना तार ये अमर पुकार का - 2
तुम साधना करो अनंत साधना करो - 2
निज राष्ट्र के शरीर के शृंगार के लिए,
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो - 2
जलती रहे मशाल देश की पुकार - 2
धुन छोड दे नई स्वतंत्रता सितार पर
पीछे किया करो शृंगार द्वार-द्वार पर -
पहले जले दिया शहीद की मजार पर
जो देश पर चढ़ा गए शरीर फूल सा
तुम वन्दना करो कृतज्ञ वन्दना करो - 2

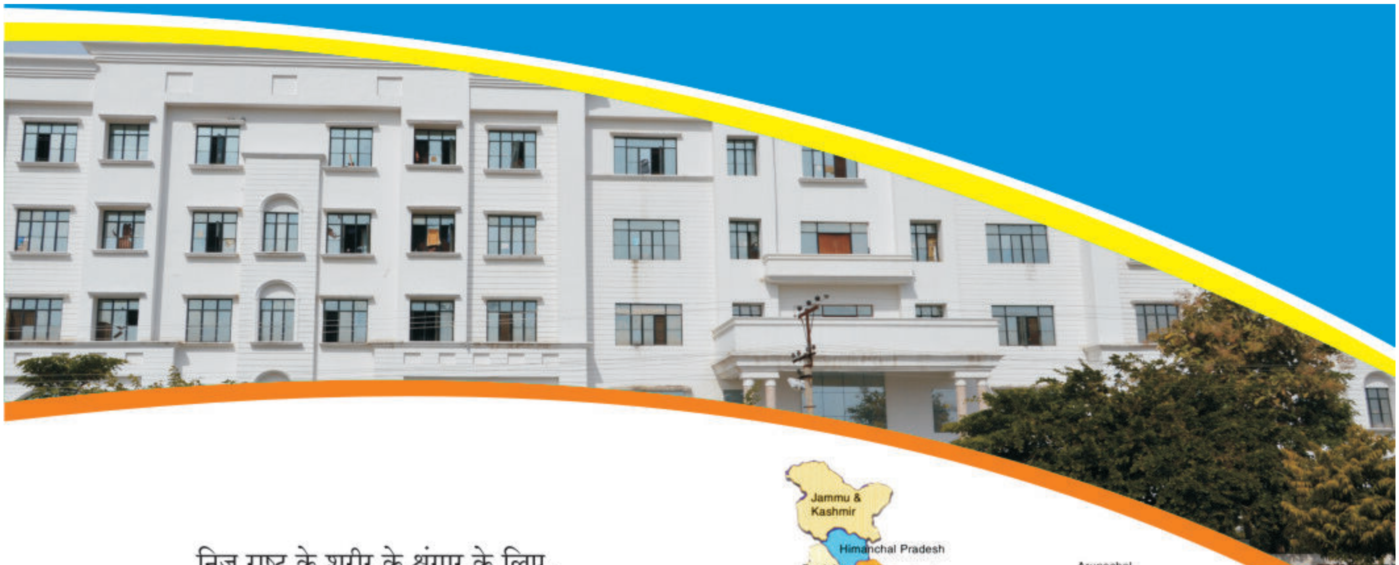

निज राष्ट्र के शरीर के श्रृंगार के लिए,
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो – 2
है देश एक लक्ष्य एक कर्म एक है
सहस्र कोटि है शरीर मर्म एक है
पूजा करो पढ़ो नमाज धर्म एक है
चाहो की एकता बनी रहे जन्म–जन्म
तुम भेद ना करो मनुष्य भेद ना करो
निज राष्ट्र के शरीर के श्रृंगार के लिए,
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो – 2

''राष्ट्र गीत''

वन्दे मातरम् !
सुजलां सुफलां, मलयज – शीतलाम्,
शस्य श्यामलां, मातरम् मातरम्।
वन्दे मातरम्
शुभ्र–ज्योत्सना पुलकित–यामिनिम्,
फुल्लकुसुमित, द्रुमदल–शोमिनीम्,
सुहासिनी, सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदां, वरदां, मातरम् !
वन्दे मातरम्

''राष्ट्र गान''

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा
द्राविड़, उत्कल, बंग
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ आशीष माँगे,
तव शुभ नामे जागे,
गाहे तव जय गाथा।
जन–गण मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

विषय - विज्ञान
प्रकरण - पाचन तंत्र
मुख
पित्ताशय

सा विद्या या विमुक्तये

विद्या भारती बी.एड. कॉलेज

तोदी नगर, सीकर (राज.), फोन : 01572-274116
Website : vibhacollege.org.in | E-mail : vibhacollegebed@gmail.com

✓विशाल, सीकर ✆ 270457